

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 06-01-2026

### विषय सूची

भारत की बौद्ध सभ्यतागत विरासत की पुनर्प्राप्ति  
वेनेजुएला से ग्रीनलैंड तक: अमेरिका की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं का विस्तार  
सरकार द्वारा डीप-टेक स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन देने के लिए वित्तपोषण मानदंडों में छूट  
भारत में पुलिस सोशल मीडिया निगरानी प्रकोष्ठों में वृद्धि  
दूरसंवेदी प्रौद्योगिकी/रिमोट-सेंसिंग लोकप्रियता प्राप्त कर रही है

### संक्षिप्त समाचार

SAMPANN (पेंशन के लेखांकन और प्रबंधन के लिए प्रणाली)  
हंटिंग्टन रोग  
भुगतान नियामक बोर्ड (PRB)  
ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ)  
वुल्फ सुपरमून  
सूर्यास्त्र रॉकेट लॉन्चर प्रणाली  
समुद्र प्रताप

## भारत की बौद्ध सभ्यतागत विरासत की पुनर्प्राप्ति

### संदर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली में “द लाइट एंड द लोटस: रेलिक्स ऑफ द अवेकन्ड वन” शीर्षक से पिपरहवा के पवित्र अवशेषों की भव्य अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जो एक सदी से अधिक समय बाद भारत में बौद्ध अवशेषों की वापसी को चिह्नित करता है।

### पिपरहवा अवशेषों के बारे में

- पिपरहवा अवशेषों की खोज 1898 में ब्रिटिश सिविल इंजीनियर विलियम क्लॉक्सटन पेप्पे द्वारा उत्तर प्रदेश के पिपरहवा में की गई थी।
  - ये पिपरहवा स्तूप से उत्खनित किए गए थे—जिसे व्यापक रूप से कपिलवस्तु, भगवान बुद्ध का जन्मस्थान, माना जाता है।
- इनमें अस्थि-खंड, सोपस्टोन और क्रिस्टल की पेटिकाएँ, बलुआ पत्थर का संदूक, तथा स्वर्ण आभूषण और रत्न जैसी भेंटें शामिल हैं।
- इन्हें भगवान बुद्ध के पार्थिव अवशेषों से संबंधित माना जाता है।
  - एक पेटिका पर ब्राह्मी लिपि में अंकित शिलालेख यह पुष्टि करता है कि ये अवशेष शाक्य कुल द्वारा बुद्ध के अवशेष के रूप में स्थापित किए गए थे।
- **स्थिति:** इन अवशेषों में से अधिकांश को 1899 में कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में स्थानांतरित किया गया और इन्हें ‘AA’ प्राचीन वस्तुएँ घोषित किया गया है, जिनकी बिक्री या हटाना प्रतिबंधित है।
  - जबकि कुछ अस्थि-अवशेष सियाम के राजा को उपहारस्वरूप दिए गए थे, एक हिस्सा पेप्पे के वंशजों के पास रखा गया।

### बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय

- **थेरवाद बौद्ध धर्म:** व्यक्तिगत मुक्ति पर केंद्रित, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रमुख।
- **महायान बौद्ध धर्म:** करुणा और बोधिसत्व आदर्श पर बल देता है, पूर्वी एशिया में फैला।

- **वज्रयान बौद्ध धर्म:** अनुष्ठानिक प्रथाओं और तांत्रिक तत्वों को सम्मिलित करता है, तिब्बत, भूटान और हिमालयी क्षेत्र में प्रचलित।

### बौद्ध धर्म की मूल दार्शनिक नींव

- **चार आर्य सत्य:**
  - **दुःख:** जीवन दुःखमय या असंतोषजनक है।
  - **समुदय:** दुःख तृष्णा और आसक्ति (तन्हा) से उत्पन्न होता है।
  - **निरोध:** तृष्णा को त्यागकर दुःख का निरोध संभव है।
  - **मार्ग:** दुःख निरोध का मार्ग अष्टांगिक मार्ग है।
- **आर्य अष्टांगिक मार्ग (मार्ग):**
  - सम्यक दृष्टि/समझ
  - सम्यक संकल्प/विचार
  - सम्यक वाणी
  - सम्यक कर्म
  - सम्यक आजीविका
  - सम्यक प्रयास
  - सम्यक स्मृति
  - सम्यक समाधि

### समकालीन विश्व में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता

- **मानसिक कल्याण:** बौद्ध ध्यान परंपराएँ, विशेषकर विपश्यना, तनाव, चिंता और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों को संभालने में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं।
- **अनासक्ति और विनम्रता की शिक्षा:** आधुनिक समाज और सोशल मीडिया द्वारा प्रोत्साहित उपभोक्तावाद, तुलना एवं अहंकार-प्रधान जीवन के प्रति नैतिक उत्तर प्रदान करती है।
- **मध्यम मार्ग:** मध्यम मार्ग का सिद्धांत भोग और कठोर तपस्या के अतियों से बचकर संतुलित जीवन जीने को प्रेरित करता है।
- **करुणा:** करुणा (करुणा) और मैत्री (प्रेमपूर्ण मैत्री) के बौद्ध मूल्य असमानता एवं संघर्ष से ग्रस्त समाजों

में सहानुभूति, नैतिक जिम्मेदारी तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हैं।

- **समावेशी और सार्वभौमिक आकर्षण:** बौद्ध धर्म का समावेशी दर्शन इसे बहुलवादी, बहुसांस्कृतिक और लोकतांत्रिक समाजों में प्रासंगिक बनाता है।

स्रोत: DD News

## वेनेजुएला से ग्रीनलैंड तक: अमेरिका की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं का विस्तार

### संदर्भ

- अमेरिकी राष्ट्रपति के हालिया बयान कि संयुक्त राज्य अमेरिका को “राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ग्रीनलैंड की आवश्यकता है” ने डेनमार्क और ग्रीनलैंड के साथ एक राजनयिक टकराव को उत्पन्न दिया है, जिससे संप्रभुता, आर्कटिक भू-राजनीति और महाशक्ति प्रतिस्पर्धा को लेकर चिंताएँ बढ़ गई हैं।

### ग्रीनलैंड के बारे में

- यह अर्ध-स्वायत्त है और डेनमार्क के साम्राज्य का हिस्सा है, साथ ही NATO के साथ सुदृढ़ रक्षा संबंध रखता है।



- **अवस्थिति:** आर्कटिक और उत्तरी अटलांटिक महासागर के बीच, कनाडा के उत्तर-पूर्व में स्थित।
- यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है, जिसका 80% से अधिक हिस्सा विशाल हिम परत से ढका हुआ है।

### ग्रीनलैंड का सामरिक महत्व

- **सैन्य और सुरक्षा महत्व:** ग्रीनलैंड की अवस्थिति उत्तरी अमेरिका और यूरोप के बीच है, जिससे यह NATO की आर्कटिक रक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनता है। यहाँ अमेरिकी सैन्य ढाँचा जैसे *पिटुफिक स्पेस बेस* स्थित है, जो बैलिस्टिक मिसाइलों की प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली का समर्थन करता है और ध्रुवीय मिसाइल प्रक्षेप पथों की निगरानी को सुदृढ़ करता है।
- **अंतरिक्ष और उपग्रह ट्रैकिंग भूमिका:** ग्रीनलैंड ध्रुवीय-कक्षा उपग्रहों को ट्रैक करने वाले ग्राउंड स्टेशनों के लिए आदर्श स्थान है, जो खुफिया, नेविगेशन, मौसम पूर्वानुमान और सुरक्षित सैन्य संचार के लिए आवश्यक हैं।
- **महत्वपूर्ण खनिज और संसाधन:** द्वीप में दुर्लभ पृथ्वी तत्वों और अन्य सामरिक खनिजों (यूरेनियम, ग्रेफाइट, जिंक) के विशाल, अधिकांशतः अप्रयुक्त भंडार हैं, जो नवीकरणीय ऊर्जा, विद्युत वाहनों और रक्षा निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं, तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता कम करने में सहायता करते हैं।
- **उभरते आर्कटिक शिपिंग मार्ग:** पिघलती आर्कटिक बर्फ *ट्रांसपोलर सी रूट* जैसे मार्ग खोल रही है, जिससे ग्रीनलैंड भविष्य के वैश्विक समुद्री राजमार्गों के निकट स्थित हो रहा है, जो अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच यात्रा को काफी छोटा कर सकते हैं।
- **वैश्विक चोकपॉइंट्स को दरकिनार करना:** ग्रीनलैंड के पास आर्कटिक मार्ग पारंपरिक चोकपॉइंट्स जैसे पनामा नहर और स्वेज नहर से बच सकते हैं, जिससे व्यापारिक लचीलापन एवं सामरिक समुद्री लचीलापन बढ़ता है।
- **आर्कटिक में भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** अमेरिका, चीन और रूस की आर्कटिक प्रभुत्व में बढ़ती रुचि ने ग्रीनलैंड को महाशक्ति प्रतिस्पर्धा में एक सामरिक संपत्ति के रूप में अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।



### अमेरिका-ग्रीनलैंड संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अमेरिका ने ग्रीनलैंड (एक डेनिश उपनिवेश) पर नियन्त्रण कर लिया ताकि नाजी जर्मनी को नियंत्रण से रोका जा सके, जब डेनमार्क पर नियन्त्रण कर लिया गया था।
- 1946 में, अमेरिका ने ग्रीनलैंड खरीदने के लिए डेनमार्क को 100 मिलियन डॉलर की पेशकश की।
- 1951 के अमेरिका-डेनमार्क रक्षा समझौते ने अमेरिका को ग्रीनलैंड में दीर्घकालिक सैन्य पहुँच प्रदान की, जिससे अमेरिकी उपस्थिति संस्थागत हो गई।
  - अमेरिका *पिटुफिक स्पेस बेस* (पूर्व में थुले एयर बेस) संचालित करता है, जो रूस, चीन और उत्तर कोरिया से मिसाइल खतरों की निगरानी के लिए एक प्रमुख स्थापना है।
- अपने पहले कार्यकाल के दौरान, राष्ट्रपति ट्रम्प ने ग्रीनलैंड खरीदने का विचार फिर से उठाया, इसे “बड़ा रियल एस्टेट सौदा” कहा, जिसे डेनमार्क ने सख्ती से खारिज कर दिया।

#### कथित ‘तीन-चरणीय रणनीति’

- डेनमार्क ने बहु-स्तरीय प्रभाव अभियान का आरोप लगाया है, जो आधुनिक हाइब्रिड वारफेयर और ग्रे-ज़ोन रणनीति को दर्शाता है।
- इस कथित रणनीति में शामिल हैं:
- सॉफ्ट पावर जुड़ाव:** उच्च-स्तरीय यात्राओं और प्रतीकात्मक पहुँच के माध्यम से।
- राजनयिक दबाव:** ग्रीनलैंड पर डेनमार्क के शासन की सार्वजनिक आलोचना शामिल।
- राजनीतिक प्रभाव अभियान:** कथित तौर पर ग्रीनलैंड में अलगाववादी भावनाओं को पोषित करने का प्रयास।

### क्या अमेरिका ने पहले भी क्षेत्र खरीदे हैं?

- लुइसियाना खरीद (1803):** अमेरिका ने फ्रांस से 20 लाख वर्ग किमी से अधिक भूमि 15 मिलियन डॉलर में खरीदी।

- अलास्का खरीद (1867):** रूस से 15 लाख वर्ग किमी भूमि अमेरिका को 7.2 मिलियन डॉलर में हस्तांतरित हुई।
- 1917 में:** अमेरिका ने डेनिश वेस्ट इंडीज खरीदी, जो अब अमेरिकी वर्जिन द्वीप हैं।
- हालांकि, सभी पूर्व अधिग्रहण बहुत अलग अंतरराष्ट्रीय कानूनी और भू-राजनीतिक मानदंडों के तहत हुए थे, जो आज की संप्रभुता-आधारित वैश्विक व्यवस्था से भिन्न हैं।

### आर्कटिक: महाशक्ति प्रतिस्पर्धा का आगामी मंच

- ग्रीनलैंड मुद्दा जलवायु परिवर्तन और पिघलते समुद्री मार्गों के बीच आर्कटिक के बढ़ते सैन्यीकरण को दर्शाता है।
- यह संप्रभुता मानदंडों के क्षरण और छोटे राज्यों पर दबाव की चिंताओं को बढ़ाता है।
  - आर्कटिक परिषद जैसी आर्कटिक शासन संस्थाएँ बढ़ते सैन्यीकरण और भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण के कारण तनाव में हैं।
- यह स्थिति वैश्विक राजनीति के पुनः-क्षेत्रीयकरण की व्यापक प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहाँ रणनीतिक सोच में भूगोल फिर से प्राथमिकता प्राप्त कर रहा है।

### आगे की राह

- संघर्ष की वृद्धि को रोकने के लिए बहुपक्षीय आर्कटिक शासन तंत्र को सुदृढ़ करना आवश्यक है।
- संप्रभुता के सम्मान और सहमति-आधारित सहयोग को आर्कटिक जुड़ाव का मार्गदर्शन करना चाहिए।
- अमेरिका और उसके सहयोगियों को सुरक्षा आवश्यकताओं को गठबंधन की विश्वसनीयता के साथ सामंजस्य स्थापित करना होगा।
- आर्कटिक स्थिरता बनाए रखने के लिए विश्वास-निर्माण उपाय और सैन्य गतिविधियों में पारदर्शिता आवश्यक है।

स्रोत: IE

## सरकार द्वारा डीप-टेक स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन देने के लिए वित्तपोषण मानदंडों में छूट

### संदर्भ

- केंद्र सरकार ने डीप-टेक स्टार्ट-अप्स को वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (DSIR) से वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए मानदंडों में छूट दी है।

### परिचय

- केंद्र ने डीप-टेक स्टार्ट-अप्स के लिए DSIR से ₹1 करोड़ तक की वित्तीय सहायता प्राप्त करने हेतु अनिवार्य तीन-वर्षीय व्यवहार्यता मानदंड को हटा दिया है।
- यह वित्तीय सहायता औद्योगिक अनुसंधान और विकास प्रोत्साहन कार्यक्रम (IRDPP) के अंतर्गत प्रदान की जाती है।
- DSIR विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है ताकि औद्योगिक अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके।
- पूर्व वित्तीय मानदंड:**
  - स्टार्ट-अप्स DSIR समर्थन के लिए तभी पात्र थे जब वे कम से कम तीन वर्षों तक स्थिरता और व्यवहार्यता प्रदर्शित करते।
  - यह शर्त अक्सर शुरुआती चरण के डीप-टेक नवप्रवर्तकों को बाहर कर देती थी, जिनके लिए सामान्यतः लंबी परिपक्वता अवधि होती है।

### डीप टेक्नोलॉजी क्या है?

- डीप टेक उन उन्नत और विघटनकारी तकनीकों को संदर्भित करता है जिनमें परिवर्तनकारी बदलाव लाने एवं भविष्य के समाधान प्रदान करने की क्षमता होती है।
- यह शब्द अत्याधुनिक अनुसंधान का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है जैसे:
  - नैनोटेक्नोलॉजी
  - बायोटेक्नोलॉजी
  - मटेरियल साइंसेज
  - क्वांटम टेक्नोलॉजी
  - सेमीकंडक्टर्स

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
- डेटा साइंसेज
- रोबोटिक्स
- 3D प्रिंटिंग आदि।

### भारत की डीप-टेक महत्वाकांक्षाओं का महत्व

- वैश्विक नेतृत्व:** भारत को “चाइना+1” वैश्विक परिदृश्य में एक विश्वसनीय R&D हब के रूप में स्थापित करता है, और क्वांटम कंप्यूटिंग व 6G जैसी अग्रणी तकनीकों में अपने विशाल STEM प्रतिभा पूल का लाभ उठाता है।
- प्रौद्योगिकीय संप्रभुता:** राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा और अंतरिक्ष के लिए विदेशी आयात पर महत्वपूर्ण निर्भरता को कम करता है, जिससे भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के प्रति असुरक्षित नहीं रहता।
- स्थानीय चुनौतियों का समाधान:** “इंडिया-फर्स्ट” समाधान सक्षम करता है, जैसे ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के लिए AI, खाद्य सुरक्षा हेतु प्रिसिजन एग्रीकल्चर, और ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए ग्रीन हाइड्रोजन।
- आर्थिक मूल्य:** एक सुदृढ़ डीप-टेक पारिस्थितिकी तंत्र भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखला में ऊपर ले जाता है, जिससे वह कम लागत वाली सेवाओं और असेंबली-आधारित विनिर्माण से उच्च-मूल्य अनुसंधान, डिजाइन एवं बौद्धिक संपदा निर्माण की ओर बढ़ता है।

### अनुसंधान विकास और नवाचार (RDI) योजना कोष

- इस योजना का प्रावधान 6 वर्षों में ₹1 लाख करोड़ का है, जिसमें FY 2025–26 के लिए ₹20,000 करोड़ आवंटित किए गए हैं।
- यह राशि भारत की समेकित निधि से वित्तपोषित होगी।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) RDI योजना के कार्यान्वयन के लिए नोडल विभाग होगा।
- योजना के प्रमुख उद्देश्य**
- निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करना ताकि वे सनराइज डोमेन्स और अन्य क्षेत्रों में अनुसंधान, विकास एवं नवाचार (RDI) को आर्थिक सुरक्षा, रणनीतिक उद्देश्य तथा आत्मनिर्भरता के लिए बढ़ा सकें।

- उच्च स्तर के टेक्नोलॉजी रेडीनेस लेवल्स (TRL) पर परिवर्तनकारी परियोजनाओं को वित्तपोषित करना।
- उन तकनीकों के अधिग्रहण का समर्थन करना जो महत्वपूर्ण या उच्च रणनीतिक महत्व की हों।
- एक डीप-टेक फंड ऑफ फंड्स की स्थापना को सुगम बनाना।

स्रोत: TH

## भारत में पुलिस सोशल मीडिया निगरानी प्रकोष्ठों में वृद्धि

### संदर्भ

- भारत के विभिन्न राज्यों में सोशल मीडिया मॉनिटरिंग सेल्स (SMMCs) के उपयोग में निरंतर वृद्धि देखी गई है। राज्य पुलिस बल इनका उपयोग गलत सूचना का सामना करने, कानून-व्यवस्था बनाए रखने और डिजिटल खतरों को पहले से रोकने के लिए कर रहे हैं।

### मुख्य निष्कर्ष (2019 से 2023 के बीच एकत्र किए गए आंकड़ों के आधार पर)

- **पुलिसिंग में डिजिटल निगरानी का विस्तार:** समर्पित सोशल मीडिया मॉनिटरिंग सेल्स की संख्या 1 जनवरी 2020 को 262 से बढ़कर 1 जनवरी 2024 को 365 हो गई है, अर्थात् मात्र चार वर्षों में लगभग 40% की वृद्धि।
- **सोशल मीडिया निगरानी में अग्रणी राज्य:** 2024 तक बिहार (52), महाराष्ट्र (50), पंजाब (48), पश्चिम बंगाल (38), और असम (37) में सबसे अधिक सक्रिय सोशल मीडिया मॉनिटरिंग सेल्स हैं।
- **संवेदनशील और संघर्ष क्षेत्रों में तीव्र विस्तार:**
  - **मणिपुर:** 2020 में 3 से बढ़कर 2024 में 16, जबकि 2023 में लगभग 140 दिनों तक इंटरनेट निलंबन का सामना करना पड़ा।
  - **असम:** 2022 में 1 सेल से बढ़कर 2024 में 37
  - **पश्चिम बंगाल:** 2022 में 2 सेल से बढ़कर 2024 में 38
  - **पंजाब:** 2022 में 24 सेल से बढ़कर 2024 में 48
- **मॉनिटरिंग सेल्स का संस्थानीकरण:** 2021 से पहले

सोशल मीडिया मॉनिटरिंग प्रायः अनौपचारिक रूप से या साइबरक्राइम पुलिस स्टेशनों के अंदर की जाती थी। लेकिन 2021 के बाद से इन इकाइयों को DoPO रिपोर्ट्स में अलग परिचालन इकाइयों के रूप में मान्यता दी गई है।

- **साइबरक्राइम अवसंरचना में समानांतर वृद्धि:** मॉनिटरिंग सेल्स का विस्तार साइबरक्राइम पुलिस स्टेशनों की वृद्धि के साथ हुआ है, जो 2020 में 376 से बढ़कर 2024 में 624 हो गए। यह डिजिटल अपराधों की बढ़ती जटिलता और विशेष प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
- **पुलिसिंग उपकरणों का आधुनिकीकरण:** पुलिस बलों के पास उपलब्ध ड्रोन की संख्या 2023 में 1,010 से बढ़कर 2024 में 1,147 हो गई है, जो हवाई निगरानी और भीड़ प्रबंधन उपकरणों के बढ़ते उपयोग को दर्शाता है।
- **BPR&D का आकलन:** पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो (BPR&D) इस विस्तार का श्रेय राज्य पुलिस बलों के आधुनिकीकरण (MPF) योजना को देता है, जिसके अंतर्गत केंद्र सरकार कानून प्रवर्तन में तकनीकी अवसंरचना और क्षमता निर्माण को उन्नत करने के लिए धन आवंटित करती है।

### राज्य पुलिस बलों के आधुनिकीकरण (MPF) योजना

- **प्रारंभ:** गृह मंत्रालय (MHA) द्वारा 1969-70 में; हालिया विस्तार 2017-2025 अवधि में।
- **वित्त पोषण पैटर्न:**
  - **केंद्र शासित प्रदेशों के लिए:** 100% केंद्रीय निधि
  - **पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों के लिए:** केंद्र (90%); राज्य (10%)
  - **अन्य राज्यों के लिए:** केंद्र (60%); राज्य (40%)
- **मुख्य घटक:**
  - **आधुनिक हथियारों और उपकरणों की खरीद:** आग्नेयास्त्र, सुरक्षात्मक गियर, ड्रोन और निगरानी प्रणालियों का उन्नयन।

- **गतिशीलता समर्थन:** कानून-व्यवस्था, आपातकालीन प्रतिक्रिया और सीमा सुरक्षा के लिए वाहन।
- **संचार प्रणाली:** क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रेकिंग नेटवर्क एंड सिस्टम्स (CCTNS) के साथ एकीकरण।
- **फॉरेंसिक समर्थन और प्रशिक्षण:** राज्य फॉरेंसिक लैब्स और साइबर लैब्स को मजबूत करना।
- **अवसंरचना उन्नयन:** पुलिस स्टेशन, आवास और कार्यालय।
- **विशेष फोकस क्षेत्र:** वामपंथी उग्रवाद (LWE) प्रभावित क्षेत्र, पूर्वोत्तर राज्य और जम्मू एवं कश्मीर।

### SMMCs का परिचालन ढांचा

- SMMCs सामान्यतः जिला या रेंज स्तर पर कार्य करते हैं, प्रायः साइबर सेल्स या विशेष शाखा इकाइयों के पर्यवेक्षण में। इनके मुख्य उद्देश्य हैं:
  - उन पोस्ट्स की निगरानी करना जो सार्वजनिक व्यवस्था या सांप्रदायिक सद्भाव को बाधित कर सकते हैं।
  - साइबरबुलिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी और गलत सूचना अभियानों का पता लगाना।
  - वरिष्ठ अधिकारियों के लिए 'ट्रेंड रिपोर्ट्स' और भावनात्मक विश्लेषण तैयार करना।
  - सामग्री हटाने या उपयोगकर्ता पहचान के लिए सोशल मीडिया कंपनियों के साथ समन्वय करना।
- **SMMCs के सकारात्मक परिणाम:**
  - COVID-19 या प्राकृतिक आपदाओं जैसी सार्वजनिक संकटों के दौरान गलत सूचना का सामना करना।
  - ऑनलाइन कट्टरपंथ और आतंकवादी प्रचार का पता लगाना।
  - फर्जी खबरों या संपादित वीडियो से भड़काई गई भीड़ हिंसा को रोकना।

- साइबर धोखाधड़ी, तस्करी और घोटालों की जांच में सहायता करना।
- महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे कुछ राज्यों ने उन्नत मॉनिटरिंग सेटअप विकसित किए हैं जो वास्तविक समय में ऑनलाइन विसंगतियों का पता लगाने के लिए AI-सहायता प्राप्त विश्लेषण का उपयोग करते हैं।

### चिंताएँ और संबंधित मुद्दे

- **निगरानी और गोपनीयता:** SMMCs गंभीर गोपनीयता और जवाबदेही प्रश्न उठाते हैं। ऐसी निगरानी प्रायः न्यायिक पर्यवेक्षण या सार्वजनिक पारदर्शिता के बिना होती है।
- ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जहाँ उपयोगकर्ताओं को आलोचनात्मक पोस्ट्स के लिए बुलाया गया या बुक किया गया, कभी-कभी IT अधिनियम या IPC की अस्पष्ट धाराओं के अंतर्गत, जिससे वैध निगरानी एवं सेंसरशिप के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है।
- **लगातार कार्यबल की कमी:** भारत की पुलिस बलों को बड़े पैमाने पर जनशक्ति की कमी का सामना करना पड़ता है, भले ही अवसंरचना और तकनीकी प्रगति हुई हो। यह विस्तारित तकनीकी अवसंरचना को लागू करने एवं बनाए रखने में चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है।

### आगे की राह: जवाबदेही के साथ तकनीक का संतुलन

- भारत को डिजिटल पुलिसिंग के लिए एक स्पष्ट कानूनी ढांचे की आवश्यकता है, जो तकनीकी क्षमता को लोकतांत्रिक सुरक्षा उपायों के साथ संतुलित करे।
- सम्मिलित सिफारिशें:
  - SMMCs के लिए स्वतंत्र पर्यवेक्षण समितियों की स्थापना।
  - डेटा उपयोग और सामग्री फ्लैगिंग को ट्रैक करने के लिए पारदर्शिता रिपोर्ट्स की शुरुआत।
  - पुलिस निगरानी को आवश्यकता, अनुपातिकता और वैधता के सिद्धांतों के साथ संरेखित करना, जैसा कि पुट्टस्वामी (2017) गोपनीयता निर्णय में निर्धारित किया गया है।

## दूरसंवेदी प्रौद्योगिकी/रिमोट-सेंसिंग लोकप्रियता प्राप्त कर रही है

### संदर्भ

- दूरसंवेदी (Remote-sensing) प्रौद्योगिकी तीव्रता से लोकप्रिय हो रही है और शोधकर्ताओं द्वारा व्यापक रूप से उपयोग की जा रही है।

### दूरसंवेदी क्या है?

- दूरसंवेदी का अर्थ है पृथ्वी की सतह के बारे में जानकारी प्राप्त करना बिना सीधे संपर्क के, सामान्यतः उपग्रहों, विमानों या ड्रोन का उपयोग करके।
- यह वस्तुओं के स्पेक्ट्रल सिग्नेचर का पता लगाने पर आधारित है, जो दृश्य, अवरक्त (infrared) और माइक्रोवेव सेंसरों के माध्यम से किया जाता है।
- भारत में दूरसंवेदी पर्यावरण निगरानी, कृषि, शहरी नियोजन और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केंद्रीय भूमिका निभाती है।

### दूरसंवेदी के व्यापक अनुप्रयोग

- **तटीय अनुप्रयोग:** तटरेखा में बदलाव की निगरानी, अवसाद परिवहन का पता लगाना और तटीय विशेषताओं का मानचित्रण। डेटा का उपयोग तटीय मानचित्रण और कटाव रोकथाम के लिए किया जा सकता है।
- **महासागर अनुप्रयोग:** महासागर परिसंचरण और धाराओं की निगरानी, महासागर तापमान एवं तरंग ऊँचाई मापना, तथा समुद्री बर्फ का पता लगाना।
  - डेटा का उपयोग महासागरों को बेहतर समझने और उनके संसाधनों का प्रबंधन करने में किया जा सकता है।
- **आपदा मूल्यांकन:** तूफान, भूकंप, कटाव और बाढ़ का पता लगाना। डेटा का उपयोग प्राकृतिक आपदा के प्रभावों का आकलन करने एवं तैयारी रणनीतियाँ बनाने में किया जा सकता है।
- **प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन:** भूमि उपयोग की निगरानी, आर्द्रभूमि का मानचित्रण और वन्यजीव आवासों का चार्ट बनाना। डेटा का उपयोग शहरी विकास से पर्यावरण

को होने वाली हानि को कम करने और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने के सर्वोत्तम तरीकों का निर्णय लेने में किया जा सकता है।

- भूजल क्षेत्रों और खनिज भंडार की पहचान।
- **वन और पारिस्थितिकी:** वन आवरण, जैव विविधता हॉटस्पॉट और कार्बन स्टॉक का मानचित्रण।
  - पौधों में, उपग्रह निकट-अवरक्त और लाल प्रकाश के माध्यम से क्लोरोफिल का पता लगाते हैं ताकि फसल एवं वन स्वास्थ्य की निगरानी की जा सके।
- **कृषि:** फसल उत्पादन का अनुमान, मृदा की नमी का मानचित्रण और सटीक खेती।
- **शहरी नियोजन:** भूमि उपयोग परिवर्तन, अवसंरचना वृद्धि और प्रदूषण की निगरानी।

### दूरसंवेदी का महत्व

- शासन और योजना के लिए विश्वसनीय डेटा प्रदान करती है।
- व्यापक बुनियादी सर्वेक्षण की आवश्यकता को कम करती है।
- निगरानी और सीमा सुरक्षा को बढ़ाती है।
- संरक्षण और जलवायु अनुकूलन रणनीतियों का समर्थन करती है।
- भारत को अंतरिक्ष-आधारित पृथ्वी अवलोकन में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करती है।

### चुनौतियाँ

- सार्वजनिक उपयोग के लिए उच्च-रिज़ॉल्यूशन डेटा की सीमित उपलब्धता।
- उपग्रह डेटा को बुनियादी सर्वेक्षणों के साथ संयोजित करने में कठिनाई।
- उन्नत भू-स्थानिक विश्लेषण में प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता।
- कुछ उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजरी के लिए विदेशी उपग्रहों पर निर्भरता।
- खुले डेटा और राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं के बीच संतुलन।



### भारत के कदम दूरसंवेदी में

- **ISRO के दूरसंवेदी उपग्रह:** भारतीय दूरसंवेदी (IRS) श्रृंखला और कार्टोसैट उपग्रहों का प्रक्षेपण उच्च-रिजॉल्यूशन इमेजिंग के लिए।
- **भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI):** द्विवार्षिक भारत राज्य वन रिपोर्ट दूरसंवेदी पर आधारित।
- **राष्ट्रीय दूरसंवेदी केंद्र (NRSC):** भू-स्थानिक सेवाएँ और आपदा समर्थन प्रदान करता है।
- **भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023:** निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है उपग्रह डेटा और अनुप्रयोगों में।
- **डिजिटल इंडिया पहल:** शासन और नागरिक सेवाओं के लिए भू-स्थानिक डेटा का एकीकरण।

### निष्कर्ष और आगे की राह

- दूरसंवेदी भारत के विकास और रणनीतिक आवश्यकताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, चाहे वह वन निगरानी हो या आपदा पूर्वानुमान।
- इसे पूरी तरह से उपयोग करने के लिए भारत को डेटा उपलब्धता, कौशल विकास और अवसंरचना उन्नयन पर ध्यान केंद्रित करना होगा।
- ISRO की पहल और राष्ट्रीय नीतियाँ संकेत देती हैं कि दूरसंवेदी शासन, विज्ञान और सुरक्षा के लिए एक प्रमुख उपकरण बन जाएगी।

स्रोत : TH

## संक्षिप्त समाचार

### SAMPANN (पेंशन के लेखांकन और प्रबंधन के लिए प्रणाली)

#### संदर्भ

- **SAMPANN ((पेंशन के लेखांकन और प्रबंधन के लिए प्रणाली))** दूरसंचार विभाग (DoT) के पेंशनभोगियों के लिए एकीकृत, ऑनलाइन पेंशन प्रबंधन प्रणाली है।

#### परिचय

- SAMPANN एकल प्लेटफॉर्म तैयार करता है जिसके माध्यम से पेंशन की प्रक्रिया, स्वीकृति और वितरण सीधे

पेंशनभोगियों के बैंक खाते में किया जाता है।

- यह ऑनलाइन शिकायत निवारण, डिजिटल प्रोफाइल प्रबंधन और लेन-देन रिकॉर्ड भी उपलब्ध कराता है, जिससे दूरसंचार सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए पारदर्शिता एवं दक्षता बढ़ती है।
- पेंशन से संबंधित दस्तावेज जैसे ग्रेच्युटी भुगतान आदेश, पेंशन प्रमाण पत्र/ईपीपीओ, पेंशन कम्प्यूटेशन भुगतान आदेश और फॉर्म 16 अब डिजिटलॉकर के माध्यम से उपलब्ध कराए गए हैं।

स्रोत: PIB

### हंटिंग्टन रोग

#### संदर्भ

- भारत में सीमित जागरूकता और विलंबित निदान के कारण हंटिंग्टन रोग को बढ़ते हुए अल्प-निदान (underdiagnosed) के रूप में पहचाना जा रहा है।

#### हंटिंग्टन रोग (HD) के बारे में

- यह एक दुर्लभ, प्रगतिशील, वंशानुगत न्यूरोडीजेनेरेटिव रोग है जो मस्तिष्क को प्रभावित करता है और मोटर कार्यक्षमता में गड़बड़ी, संज्ञानात्मक गिरावट तथा मनोरोग संबंधी समस्याएँ (अवसाद, मनोविकृति, चिड़चिड़ापन, OCD) उत्पन्न करता है, जिससे आजीवन विकलांगता होती है।
- यह रोग हंटिंग्टिन (HTT) जीन में उत्परिवर्तन (mutation) के कारण होता है और ऑटोसोमल डॉमिनेंट पैटर्न का अनुसरण करता है, अर्थात् यदि माता-पिता में से किसी एक से उत्परिवर्तित जीन बच्चे को मिलता है तो उसे यह रोग होगा।
- सगोत्र विवाह से संक्रमण की संभावना 75% तक बढ़ जाती है।
- लक्षण सामान्यतः 40 से 50 वर्ष की आयु में शुरू होते हैं और 15-20 वर्षों तक धीरे-धीरे बढ़ते हैं।
- यद्यपि इस रोग का कोई उपचार नहीं है, लेकिन उपलब्ध उपचार रोगियों के जीवन की गुणवत्ता सुधार सकते हैं और देखभाल करने वालों का भार कम कर सकते हैं।

**नीतिगत दृष्टिकोण**

- WHO दुर्लभ रोगों को उन रोगों के रूप में परिभाषित करता है जो 1,000 लोगों में 1 या उससे कम को प्रभावित करते हैं।
- विश्व स्तर पर 7,000 से अधिक दुर्लभ रोग हैं, लेकिन 5% से कम के लिए उपचार विकल्प उपलब्ध हैं।
- 2021 में केंद्र सरकार ने *राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति (NPRD)-2021* बनाई, जिसका उद्देश्य दुर्लभ रोगों की पहचान, रोकथाम और प्रभावित परिवारों को सहायता प्रदान करना है।
  - NPRD भारत में 63 दुर्लभ रोगों को मान्यता देता है, लेकिन हंटिंग्टन रोग इसमें शामिल नहीं है।
  - मान्यता प्राप्त 63 रोगों के रोगी *PM-JAY* के तहत ₹50 लाख तक की वित्तीय सहायता पाने के पात्र हैं।

स्रोत: TH

**भुगतान नियामक बोर्ड(PRB)****समाचार में**

- भुगतान नियामक बोर्ड(PRB) की प्रथम बैठक RBI गवर्नर संजय मल्होत्रा की अध्यक्षता में हुई, जिससे भारत के नए भुगतान शासन ढांचे का संचालन शुरू हुआ।

**भुगतान नियामक बोर्ड के बारे में**

- भुगतान नियामक बोर्ड (PRB) एक वैधानिक निकाय है जिसके माध्यम से भारतीय रिजर्व बैंक भारत में भुगतान और निपटान प्रणालियों पर नियामक एवं पर्यवेक्षी नियंत्रण करता है।
- इसे *भुगतान और निपटान प्रणाली (PSS) अधिनियम, 2007* की धारा 3 के अंतर्गत बनाया गया।
- इसने पूर्ववर्ती *भुगतान एवं निपटान प्रणालियों के विनियमन और पर्यवेक्षण के लिए बोर्ड(BPSS)* को प्रतिस्थापित किया।
- इसका उद्देश्य डिजिटल और गैर-नकद भुगतान में सुरक्षा, दक्षता, स्थिरता एवं उपभोक्ता संरक्षण सुनिश्चित करना है।

स्रोत: AIR

**ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ)****समाचार में**

- राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) ने ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ) में पर्यावरणीय मानदंडों के अनुपालन न होने पर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया।

**ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ) क्या है?**

- ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन (TTZ) लगभग 10,400 वर्ग किमी का संरक्षित *पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र* है, जिसे ताजमहल को पर्यावरणीय प्रदूषण और पारिस्थितिकीय क्षरण से बचाने के लिए बनाया गया।
- यह व्यापक आगरा क्षेत्र को कवर करता है और इसमें ताजमहल, आगरा किला एवं फतेहपुर सीकरी जैसे प्रमुख धरोहर स्थल शामिल हैं।
- TTZ व्यवस्था का आधार *M.C. मेहता बनाम भारत संघ (1996)* में सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश हैं, जिनमें क्षेत्र में कठोर प्रदूषण-नियंत्रण उपायों (उद्योगों और उत्सर्जन का विनियमन, स्वच्छ ईंधन/तकनीक का उपयोग) को अनिवार्य किया गया।
- *M.C. मेहता (2015)* में सर्वोच्च न्यायालय ने ताजमहल से 5 किमी हवाई दूरी के अंदर पेड़ों की कटाई पर भी प्रतिबंध लगाया और किसी भी कटाई से पहले न्यायालय की अनुमति आवश्यक की।

**NGT के बारे में**

- NGT एक वैधानिक निकाय है जिसे *राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम, 2010* के अंतर्गत स्थापित किया गया है ताकि पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण से संबंधित मामलों का शीघ्र एवं प्रभावी निपटारा किया जा सके।
- यह अनुसूची I में सूचीबद्ध प्रमुख पर्यावरणीय कानूनों से जुड़े मामलों की सुनवाई करता है, जिनमें *पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986*, *जल (प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974*, तथा *वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1981* शामिल हैं।

स्रोत: TH

## वुल्फ सुपरमून

### संदर्भ

- जनवरी 2026 का वुल्फ सुपरमून हाल ही में घटित हुआ।

### परिचय

- वुल्फ सुपरमून दो अलग-अलग अवधारणाओं का संयोजन है: वुल्फ मून और सुपरमून।
  - वुल्फ मून:**
    - यह शब्द जनवरी में आने वाले पूर्णिमा चंद्रमा को संदर्भित करता है।
    - पूर्णिमा के पारंपरिक नाम मौसमी पैटर्न से उत्पन्न हुए और आधुनिक कैलेंडर से पहले समय को चिह्नित करने के लिए लोककथाओं एवं पंचांगों के माध्यम से लोकप्रिय हुए।
    - यह नाम सर्दियों की कहानियों से जुड़ा है, जब भेड़ियों की आवाजें अधिक सुनाई देती थीं, हालांकि इसका कोई खगोलीय महत्व नहीं है।
  - सुपरमून:**
    - सुपरमून एक खगोलीय घटना है जो तब होती है जब पूर्णिमा चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकट बिंदु (पेरिजी) पर होता है।
    - चंद्रमा एक दीर्घवृत्ताकार कक्षा का अनुसरण करता है, जिसका सबसे दूर बिंदु एपोजी कहलाता है।

### मुख्य विशेषताएँ

- वुल्फ सुपरमून के दौरान चंद्रमा सामान्य पूर्णिमा की तुलना में थोड़ा बड़ा और अधिक चमकीला दिखाई देता है।
- इससे जुड़ा एक दृश्य प्रभाव मून इल्यूजन है, जिसमें चंद्रमा क्षितिज के पास बड़ा दिखाई देता है, जो मानव धारणा के कारण होता है, वास्तविक आकार परिवर्तन के कारण नहीं।

स्रोत: TH

## सूर्यास्त्र रॉकेट लॉन्चर प्रणाली

### संदर्भ

- भारतीय सेना ने NIBE लिमिटेड के साथ, इजराइल के सहयोग से, लंबी दूरी की सूर्यास्त्र रॉकेट लॉन्चर प्रणाली की आपूर्ति के लिए ₹293 करोड़ का अनुबंध किया है।

### सूर्यास्त्र रॉकेट लॉन्चर के बारे में

- सूर्यास्त्र भारत का प्रथम स्वदेशी रूप से निर्मित यूनिवर्सल मल्टी-कैलिबर रॉकेट लॉन्चर है, जो 300 किमी तक की सटीक सतह-से-सतह मार करने में सक्षम है।
- यह प्रणाली एक ही लॉन्चर से कई प्रकार के रॉकेटों को एकीकृत और प्रक्षेपित कर सकती है, जिससे विभिन्न परिचालन परिस्थितियों में लचीलापन मिलता है।
- इसने पाँच मीटर से कमसर्कुलर एरर प्रॉबेबल (CEP) प्रदर्शित किया है, जो उच्च-सटीक गहन-प्रहार क्षमता को दर्शाता है।
- यह लॉन्चर 100 किमी तक की लॉयटिंग म्यूनिसन भी दागने में सक्षम है, जिससे इसकी भूमिका पारंपरिक रॉकेट आर्टिलरी से आगे बढ़ जाती है।

स्रोत: TH

## समुद्र प्रताप

### समाचार में

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भारतीय तटरक्षक जहाज (ICGS) 'समुद्र प्रताप' को कमीशन किया।
- समुद्र प्रताप**
  - इसे गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (GSL) द्वारा दो-जहाज PCV परियोजना के अंतर्गत डिजाइन और निर्मित किया गया है।
  - यह भारतीय तटरक्षक में कमीशन किया गया प्रथम स्वदेशी रूप से डिजाइन एवं निर्मित प्रदूषण नियंत्रण पोत है और ICG बेड़े का सबसे बड़ा जहाज भी है।
  - यह पहला भारतीय तटरक्षक जहाज है जिसमें डायनेमिक पोजिशनिंग केपेबिलिटी (DP-1) लगी है और इसे FiFi-2/FFV-2 नोटेशन सर्टिफिकेशन प्राप्त है।
  - इसमें तेल रिसाव का पता लगाने और प्रतिक्रिया देने के लिए विशेष प्रणालियाँ लगी हैं, जिनमें ऑयल फिंगरप्रिंटिंग मशीन, जायरो-स्टैबिलाइज़्ड स्टैंडऑफ़ एक्टिव केमिकल डिटेक्टर और ऑनबोर्ड प्रदूषण नियंत्रण प्रयोगशाला उपकरण शामिल हैं।
  - इसमें स्वदेशी रूप से विकसित इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम, इंटीग्रेटेड प्लेटफ़ॉर्म मैनेजमेंट सिस्टम, ऑटोमेटेड पावर मैनेजमेंट सिस्टम और उच्च क्षमता वाली बाहरी अग्निशमन प्रणाली भी है।

स्रोत: TH